B.A.3

Short Notes on Raga Malkuns.

- यह राग भैरवी थाट से उत्पन्न माना गया है।
- इसकी जाति - औडव - औडव है।
- इसका वादी स्वर 'म' तथा संवादी षड्ज है।
- रात्रि के तृतीय प्रहर में इसे गाते हैं।
- इसमें ऋषभ और पंचम वर्ज्य है।
- इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान होती है।
- इसमें बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना, मसीतखानी, रजाखानी गतें सभी गाई बजाई जाती हैं।
- न्यास के स्वर - सा, ग, म
- समप्रकृति राग - चन्द्रकौंस
- इसमें केवल 'नि' शुद्ध कर देने से चन्द्रकौंस राग हो जाता है।
- इसमें पंचम वर्ज्य होने के कारण इसे गाते समय तानपूरे के प्रथम तार को मन्द्र मध्यम से मिलाते हैं।